Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
12
2019
VOL. 171

Founder's Essay

दूसरों का सम्मान करने के दो तरीके

ण्डरीक सूत्र हमें बोधिसत्व सदा अपरिभूत के बारे में बताता है, जो दूसरों के प्रति श्रद्धाभाव का प्रदर्शन करने में कभी नहीं चूकते थे, यहाँ तक कि जब लोगों ने उन पर पत्थर फेंका और उन्हें डण्डे से प्रताड़ित किया। श्रद्धाभाव के प्रदर्शन का एक और उदाहरण शाक्यमुनि बुद्ध की घोषणा है कि "देवदत्त मेरे अच्छे मित्र थे," जिसके द्वारा बुद्ध अपने आध्यात्मिक परामर्शदाता के रूप में पूजनीय होने का तरीका सिखाते हैं, जो उनके प्रतिद्वंदी था और उनका अपकार किया था। जो लोग दूसरों को पूजने की इन दो तरीकों का पालन करना नहीं भूलते हैं, उनकी पुण्डरीक सूत्र के अभ्यासी के रूप में अर्हता है।

जब हम अपनी सुविधा, इस तरह से या उस पर, चाहते है, वह पूरी तरह से विपरीत प्रभाव डालता है क्योंकि पुण्डरीक सूत्र में श्रद्धाभाव के दो तरीके-अधिकतर, यह हमें हमारे चेहरे पर आदतन कटुभाव आने का कारण बनता है। जब आप कुछ भी नहीं करते हैं, लेकिन सब कुछ के बारे में चिंता करते हैं, तो वह भाव वैसे ही प्रकट हो जाता है, जैसा कि आपको डर था।

यही कारण है कि आप जिस भी परिस्थिति में हैं और जिस भी प्रकार के लोगों के साथ आपका सामना होता है, अपने आप में सोचना महत्वपूर्ण है कि "यह मेरे अभ्यास के लिए मुझे दिया गया एक कार्यक्रम है!"

यदि आप इतने संकल्पबद्ध हैं, तो आप दूसरों को ध्यान में रखकर सब कुछ सोचने में सक्षम हैं, वनिष्पत अपनी सुविधा के अनुसार अच्छे या बुरे, बेहतर या अवांछनीय होने की बात नहीं सोचेंगे। फिर आपके पास जो कुछ भी आता है, उसका अपनी क्षमतानुसार सामना करने का आपमें अदम्य दृढ़ साहस होगा।

निक्क्यो निवानो, काइसो ज़ुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 182 - 183

Living the Lotus
Vol. 170 (November 2019)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

वाकपटुता से बोलना

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ

शब्दों की शक्ति

बाइबिल में जॉन का धर्मोपदेश प्रसिद्ध वाक्यांश के साथ शुरू होता है, "प्रारंभ में शब्द थे।" निश्चित रूप से, इस वाक्यांश से पता चलता है कि शब्दों के प्रयोग से, हमारा मानव हृदय विकसित और उन्नत हुआ है, क्या ऐसा नहीं है?

हम मानव प्राणी "हृदय" के साथ जन्म लेते हैं-अर्थात्, अनलंकृत संवेग एवं विचार एक व्यक्ति को बनाता है, और वह दूसरों के साथ शब्दों के प्रयोग के माध्यम से संवाद करके तथा अपनी भावनाओं को व्यक्त करके विकसित होता है।

जबकि यह साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि शब्दों की शक्ति कितना अपार है, दूसरी ओर, कवि शुजी तेरायामा (1935–83) दिखलाते हैं कि "आधुनिक लोग जो खो रहे हैं, वह 'एक दूसरे से बात करने' जैसी चीजें नहीं हैं, बल्कि एक साथ चुप रहना है।" यह हो सकता है कि मन का विकास शब्दों के विकास के साथ नहीं हुआ है, या यह कि मन का क्षय हुआ है, क्योंकि कई मामलों में शब्दों का इस्तेमाल दूसरों को चोट पहुँचाने के लिए हथियार के रूप में किया जाता है।

इसलिए, जब शब्दों की शक्ति अपार है, तो बहुत सी बातें करने के बजाय, मौन रहने का समय निकाल कर अपने स्वयं पर मनन चिन्तन करना अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। हम किस बारे में बात करते हैं और हम कैसे संवाद करते हैं-उनमें एक साथ चुप रहना-बेहतर रिश्ते बनाने का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

पूर्ण से सीखना

पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त-8: "पाँच सौ शिष्यों के बुद्धत्व प्राप्ति का आश्वासन," में शाक्यमुनि ने धर्म के आचार्यों में सबसे अग्रणी कहे जाने वाले पूर्ण की प्रशंसा करते हुए कहा है कि "कोई भी इतना स्पष्ट इसकी व्याख्या नहीं कर सकता है, जितना कि पूर्ण" (अर्थात पूर्ण के सिवाय अन्य के पास शब्दों की शक्ति का उपयोग करने और प्रदर्शित करने की इतनी अपार क्षमता नहीं है)। पूर्ण के शब्द-उन्होंने लोगो में खुशी का संचार करने की "इच्छा से सम्पूर्ण एकाग्र चित्त से धर्म को उन तक पहुँचाया और उसकी विवेचना की"-लोगों के मन में दृढ़ता से प्रतिध्वनित हुआ।

हमें धर्म को लोगों तक कैसे पहुँचाना चाहिए, इस सम्बंध सूत्र का निर्देश है कि हमें लोगों के मन में खुशी का संचार कराना चाहिए, समझना चाहिए कि जिस किसी के साथ हम जुड़ते हैं, उसके पास चीजों

की व्याख्या करने का अपना तरीका है, और महत्वपूर्ण बिंदुओं को आसानी से समझने लायक बनाना चाहिए, जिन्हें लगे कि लोग करने में सक्षम होंगे।

वाकपटुता का अर्थ यह नहीं है कि किसी के पास अत्यधिक ज्ञान है और वह बड़ा बुद्धिमान है, या यह कि वह निर्झर बहते जल की तरह सहजता से बोले। जो अधिक महत्वपूर्ण है वह एक सौम्य आचार-व्यवहार है-जो अक्सर उन लोगों में स्वत: मुस्कान ले आते हैं, जिनसे बातें करते हैं-और सहानुभूतिपूर्ण भरे शब्दों का आदान-प्रदान करते हैं। ऐसा करने से, आपके द्वारा बोले जाने वाले शब्दों में स्वाभाविक रूप से दयाभाव होगा और स्वीकारने में आसान होगा, और वे उन लोगों के मन में अच्छी तरह बैठ जाएँगे, जिनसे बातें करते हैं।

जब आप उन लोगों के प्रति सहानुभूति रखते हैं जिनसे आप बातें कर रहे हैं और उनकी भावनाओं के साथ-साथ उनकी परिस्थितियों पर सहानुभूतिपूर्वक विचारों का आदानप्रदान करते हैं, तो आपके द्वारा चुने गए शब्दों में, मुझे लगता है, पूर्ण के बराबर शक्ति का प्रदर्शन होगा।

हालांकि, एक ऐसा क्षेत्र हो सकता है जहाँ हमें लगता है कि बाधा अधिक है: लोगों के साथ इस तरह से संवाद करना, जिसमें महत्वपूर्ण चीजें आसानी से समझ में आ जाय। उपन्यासकार हिसाशी इनोए (1934–2010) ने शब्दों के प्रयोग के तरीके के बारे में लिखा, "कठिन चीजों को सरल बनाना और सरल चीजों को, गूढ़ गंभीर," और यह हो सकता है कि शाक्यमुनि के समय से वर्तमान समय तक, लोगों के साथ संवाद करने की मूल बातें बहुत ज्यादा नहीं बदली है।

हालाँकि, यह कहना एक बात है कि हम इसे समझते हैं, लेकिन ऐसा कहना हर कोई सहज ही समझ सकता है कि धर्म का प्रसार करते समय क्या महत्वपूर्ण है, फिर भी, मुश्किल है। इस संबंध में, कैसे निबंध लिखना चाहिए के तरीके के बारे में इनोए से दो सहायक उद्धरण हैं: "सरल और आसानी से समझने योग्य शब्दों में" और "अपने शब्दों में लिखें कि आप अकेले क्या लिख सकते हैं।"

यदि हम अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में बात करते हैं, तो हम अपने शब्दों में बोल सकते हैं। प्रेरणा और अहसास के अनुभव के बारे में खुलकर बात करें। चूँकि कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है, भले ही आपको अपने विषय की पूरी समझते नहीं हैं, आप जो कुछ भी जानते हैं, उसके बारे में-कृतज्ञता और खुशी का भाव के साथ बोलना-उन महत्वपूर्ण चीजों को संचारित करेगा जिन्हें कोई आसानी से समझ सकेगा।

इस वर्ष आपके पास कौन से प्रेरणादायक अनुभवें हैं? अब, आप किन महत्वपूर्ण चीजों के सम्बंध अन्य लोगों के साथ संवाद करेंगे?

कोसेइ, दिसंबर 2019

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः
प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र
अध्याय 12: देवदत्त (1)

पूर्ववर्ती परिवर्त: "रत्नस्तूपसंदर्शन" में परमार्थ सत्य की विवेचना की गयी है-लोगों की मूलभूत प्रकृति बुद्धप्रकृति है। तदनुसार, यह देखना कि व्यक्ति की अपनी मूलभूत प्रकृति बुद्धप्रकृति है, जो एक सच्चे मानव के रूप में स्वयं को परिपूर्ण करने का पहला और उच्चतम तरीका है। वास्तव में, जो भी इस धारणा को पूरी तरह से धारण कर लेता है, वह बुद्ध के अलावा और कोई नहीं है। इसलिए, कोई भी व्यक्ति-चाहे वह एक दुष्ट हो, जो लोक से या किसी बच्चे से घृणा करता है-जो पूरी तरह से अपने स्वयं के बुद्ध-स्वभाव के प्रति जागरूक है, दृढ़ता से विश्वास करता है, तो वह बुद्ध बनेगा।

अपने स्वयं के बुद्ध-स्वभाव को जागृत करने का उपदेश वर्तमान परिवर्त: "देवदत्त" में विकसित किया गया है, जो दो भागों से बना है, पहले में, एक दुष्ट पुरुष बुद्धत्व की प्राप्ति का आश्वासन पाता है और दूसरें में, एक स्त्री को बुद्धत्व की प्राप्ति होती है।

दुष्ट पुरुष को बुद्धत्व की प्राप्ति का आश्वासन

परिवर्त का आरंभ, होता है शाक्यमुनि द्वारा अपने पूर्व जीवन की एक कथा के बृतांत से होता है। इस कथा के अनुसार एक राजा लम्बे दीर्घकाल से राज कर रहे थे। वे अपने सुखसुविधा से भरपूर जीवन से संतुष्ट नहीं थे और सत्य मार्ग (सद्धर्म) की गवेषणा करते रहते थे। इस तरह के मार्ग की गवेषणा के प्रयास के लिए, उन्होंने अपने जीवन जीने के तरीके को छोड़ने का मन नहीं बनाया, बल्कि अपने राज्य में घोषणा करवायी कि वह किसी भी व्यक्ति का सेवक बन जाएंगे जो उसे ज्ञान दे सकेगा कि कैसे सभी लोगों को मुक्ति दिलाया जा सकता है।

कुछ समय बाद, एक सन्यासी उसके पास आया और कहा कि वह सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र को जानता है, जिससे सभी लोग मुक्त हो सकते हैं, और वह राजा को इसकी शिक्षा देगा, यदि वे अपनी बातों का पालन करते हैं।

तत्क्षण, राजा सन्यासी का सेवक बन गया। उसने फल और मेवे इकट्ठा किया, जल लाया, उसकी सभी जरूरतों को पूरा किया, और यहाँ तक कि जमीन पर लेटकर अपने शरीर को सन्यासी मालिक के बैठने एवं आराम करने के लिए समर्पित किया। इतनी दूर चली गई कि उसका मालिक उसके शरीर पर बैठकर आराम कर सके। इस तरह, सेवा में रत रहकर वे परमार्थ देशना की विवेचना सुन सकें।

इस कथा को पुन: गाथा में दोहराया गया। फिर, शाक्यमुनि ने घोषणा की कि उनके सम्बोधिज्ञान की प्राप्ति का सम्बन्ध दीर्घ अतीत से उनके पूर्व जन्मों के अभ्यासों एवं कठिन आचार से है और सन्यासी जिससे मुझे शिक्षा मिली, वह पिछले जन्म में देवदत्त के अलावा और कोई नहीं था। मेरे साथ देवदत्त की इस अच्छी मैत्री के कारण, वह बुद्ध बनेगा और असंख्य जीवित प्राणियों को मुक्त कराने में सक्षम होगा। फिर उन्होंने घोषणा की कि देवदत्त एक समय भविष्य में लंबे अभ्यास के बाद बुद्ध बन जाएगा।

अब, यह देवदत्त शाक्यमुनि के चचेरे भाई थे और शिष्यों में गिने जाते थे। यद्यपि वे तेज बद्धि के थे, उनकी भावना विकृत थी और वह सब कुछ का विरोध करते थे, संघ की एकजुटता को भंग किया और शाक्यमुनि के जीवन पर भी आघात का प्रयास किया, इसलिए वे एक दुर्जन थे। श्रोताओं को बहुत आश्चर्य हुआ और चकित, शाक्यमुनि को सुनने के लिए आगे आये। उन्होने कहा कि ऐसा बड़ा विश्वासघाती उनका अपना अच्छा मित्र था, देवदत्त को धन्यवाद है कि वह बुद्ध बनेगा, और अंतत: देवदत्त भी बुद्ध बन जाएगा।

आभार की एक अटूट भावना

हम यहाँ आश्चर्यचकित हो सकते हैं कि क्यों शाक्यमुनि ने अपने पूर्व के जीवन की इस कथा का वर्णन किया और कहा कि ये सब "देवदत्त की अच्छी मित्रता के कारण हुआ।" लेकिन कोई भी शाक्यमुनि जैसे की इतनी शुद्ध भावना के साथ, सभी चीजें-चाहे वह अच्छी हो या बुरी-बोधिज्ञान का कारण बनती हैं। इसलिए, स्वाभाविक रूप से वह स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजों के लिए आभार महसूस करता है, उनके बीच जो घटता है, वह उसे प्रबुद्धता की ओर जाने में मदद करता है।

यह एक सबक है जिसे हमें शाक्यमुनि की कृतज्ञता की दृढं भावना से सीखना चाहिए: अच्छी और बुरी दोनों चीजों को, गहन ज्ञान के कारण के रूप में देखा जाना चाहिए, जिसके लिए हम आभारी हो सकते हैं। यह इस परिवर्त का पहला आवश्यक बिंदु है।

एक और प्रश्न यह हो सकता है कि देवदत्त जैसे दुष्ट व्यक्ति को भी बुद्धत्व का आश्वासन दिया गया। खैर, भले ही उसमें जो भी बुराईयाँ थीं वह शाक्यमुनि के सम्बोधि ज्ञान का कारण बन गया, लेकिन देवदत्त ने इसके लिए श्रेय नहीं लिया, और नहीं वह उन बुराईयों से दूर रहा। इस प्रकार, देवदत्त के प्रति कृतज्ञता और उसके बुद्धत्व के आश्वासन के बीच कोई संबंध नहीं है।

शाक्यमुनि ने देवदत्त के उदाहरण का उपयोग चौंकाने वाले और नाटकीय ढंग से उस सत्य को दर्शाने के लिए किया जिसको उन्होंने बार-बार उजागर किया है: वह यह है कि सभी मनुष्यों में समान रूप से बुद्ध-प्रकृति अन्तर्निहित है। शाक्यमुनि ने उपायकौशल्य के माध्यम से सभी लोगों को अपने बुद्ध-स्वभाव को स्वयं देखने के लिए उत्साहित किया है।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्र: प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.121-26.

Director's Column

हम अनेक लोगों के साथ विश्वास की खुशी का साझा करें!

दिसंबर में प्रवेश करते ही, वर्ष का अंत निकट आ जाता है। 2019 आपके लिए कैसा रहा?

इस वर्ष रिश्शो कोसेइ काइ ने संयुक्त राज्य अमेरिका में धर्म प्रसार की साठवीं वर्षगांठ मनाई गयी और हवाई में (साठवीं वर्षगांठ, 31 मार्च को), लॉस एंजिल्स में (साठवीं वर्षगांठ, 6 अक्टूबर को) और सैन फ्रांसिस्को में (चालीसवीं वर्षगांठ, 29 सितंबर को) मनाई गयी। अनेक विदेशी सदस्यों ने भक्ति भाव का प्रदर्शन (शाश्वत बुद्ध शाक्यमुनि की एक प्रतिमा) को अपने घर की वेदियों में स्थापित कर मनाया और कई अन्य लोगों ने धर्मभाणक की योग्यता प्राप्त की। इन सभी सदस्यों ने आगे बोधिसत्व अभ्यास में संलग्न रहने का संकल्प लिया।

इस महीने, धर्मभाणक की योग्यता समारोह बैंकॉक में रिश्शो कोसेइ काइ का दक्षिण एशिया डिवीजन द्वारा आयोजित किया जाएगा। यह पहली बार होगा कि यह प्रस्तुति विदेशों में की जा रही है।

दक्षिण और पूर्वी एशिया में, कई सदस्यों ने धर्मभाणकों और युवा नेताओं की धर्म के प्रचार प्रसार संगोष्ठियों में भाग लिया। पुण्डरीक सूत्र पर सेमिनार संसार भर में आयोजित किए गए, जिसके माध्यम से प्रतिभागियों ने अपने शास्त्र के अध्ययन को आगे बढ़ाया। संयुक्त राज्य में, हमारे जापानी भाषी नेताओं के लिए एक शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने शिक्षा देने की अपनी खुशी का नवीनीकृत किया।

आपके पास 2019 के लिए आभारी होने के लिए बेशुमार अनुभव थे, क्या आपके पास नहीं थे? आइए, हम पिछले एक वर्ष के दौरान धर्ममार्ग के अभ्यास पर ध्यान दें, मिले आशीर्वाद की सराहना करें और जितना संभव हो उतने लोगों के साथ अपने विश्वास की खुशी को साझा करें!

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp